चुनाव प्रचार डायरी –17–04–2014

–अरुण जेटली

राज्य सभा में विपक्ष के नेता

निष्पक्ष लेकिन प्रतिशोधी नहीं

एनडीए के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार, नरेन्द्र मोदी ने टेलीविजन न्यूज एजेंसी एएनआई को एक इंटरव्यू में महत्वपूर्ण टिप्पणी की। अगली सरकार सकारात्मक सोच के साथ काम करेगी प्रतिशोध की भावना से नहीं।

भारत बदल रहा है। लोग बेचैन हो गए हैं। आकांक्षापूर्ण वर्ग का विस्तार हो रहा है। लोग ऐसी व्यवस्था में रहने की उम्मीद कर रहे हैं जहां जीवन स्तर सार्थकपूर्ण तरीके से परिष्कृत हो। नई पीढ़ी शिक्षा, नौकरी, आवास, स्वास्थ्य देखभाल और सफाई के क्षेत्र में अवसर तलाश रही है। वह चाहती है कि दलों के बीच झींगामुश्ती करने के बजाय राजनीति में काम करने का तंत्र सुनिश्चित होना चाहिए।

इन परिस्थितियों में, सरकारों को उनके कामकाज और उपलब्धियों के कारण याद किया जाएगा न कि अपने प्रतिद्वंदियों के खिलाफ किये जाने वाले राजनीतिक संघर्ष के कारण। यह बताने की जरुरत नहीं कि कानून का पालन होना चाहिए। अगर लोग अपराध करते हैं, तो उनकी स्वतंत्र एजेंसियों से जांच कराई जानी चाहिए। संस्थानों की स्वतंत्रता और पेशेवराना अंदाज पक्का होना चाहिए। एजेंसियां ईमानदार, राजनैतिक हस्तक्षेप से दूर लोगों द्वारा चलाई जानी चाहिए। यदि भविष्य की सरकार इसका आश्वासन देती है तो वह छोटी सी भूमिका निभाएगी।

मतदाता उल्लू नहीं हैं

121 निर्वाचन क्षेत्रों में आज चुनाव हो रहा है, 2014 के आम चुनावों के लिए करीब–करीब आधा भारत मतदान कर चुका है। झुकाव किस तरफ है? तीसरा मोर्चा अथवा संघीय मोर्चा असफल हो चुका है। कांग्रेस काफी पीछे रह गई है। केवल एनडीए ही वास्तव में सरकार बना सकता है। यूपीए के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर के अलावा, देश की जनता नरेन्द्र मोदी के पक्ष में है। औसत भारतीय की चिंता है कि कौन स्थिर सरकार प्रदान करेगा। इस सवाल का जवाब भाजपा और एनडीए है। राहुल गांधी को यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि लोग कांग्रेस से नाराज़ हैं। कांग्रेस के खिलाफ मतदान करने वाले मतदाता उल्लू नहीं हैं। हारने की संभावना को देखते हुए नेता को अपनी शालीनता नहीं खोनी चाहिए। जो लोग कांग्रेस के खिलाफ मतदान करेंगे उन्होंने कुछ अच्छा सोचा होगा। नाराज मतदाता चार अक्षर का शब्द नहीं हैं जैसाकि राहुल गांधी उन्हें समझते हैं।